

ॐ नमः श्री वज्र सत्त्वाय नमः ॥ अथ माहावत्याव्रजमा
हा ॥ ॐ नमः ॥ यंत्र गव्य साधना ॥ गन स पूजा ॥ योथम
गा ॥ ॐ नमः ॥ ॥ त्रिकानन मुला काल ॥ खर्ज योष धर्मां कृम
कल्यायनी वली हा सुं पूजा कर्म सखा पथ ॥ ॥ अकार
नयाय ॥ ॥ ॐ आरुध वजां कृम ॥ ॐ वजा पा सवी न ना पय कृ

॥ ॐ वज्र महाद्वीज वन्धवं ॥ ॐ वजां व मे वीज पु वं म्पहा ॥ ॥
ॐ मुपुकी लि क व ऊ स्वाहा ॥ ॥ वज्र वली थीय ॥ ॐ कीं ४ आ व मनं
पुगी रु स्वाहा ॥ नीलाजन याय ॥ ॥ ॐ क कायं काल न वायु म सु
ली न का व न ना गनी म सु ली क मायनी हि मू गु व ठ व ठी यां भी
क य न हा जनी ॥ क रु क का य नी पू नी नी ॥ ॐ ॐ आं जीं खं रु ला मा पा

कां वका नज रू प वर मरु पय युदिये नूप्य य वृक्ष ॥ ॐ आ ४ रू आ
का नजं शी न स मू डं रु इ य नी ॐ का नजं प वर वा य सू ख रा वं ॥ प वर
य का का स्वा का नजं वा मू की स्व रा वं उ य वी स्प हा का नजं वी वी उ प
ष्य माला न रू त रू त्वा का न न की ॥ ॐ का नजं नी ला दि पी ष्टे श्री का नजं
न की श्री का नजं म त्ते ख का नजं मा न्ते रू का नजं सर्व व श्री को ॥

॥ ॥ उ वं नू धी न म त्त्स मां स न का य नी रु म र्त्त व र्त्ति नी य का का
दी वी रु य थ क मं पु या ग वा वा न सी न या ल व न र्त्ति न कं ॥ क
मा कू कू उ का मू नी रू क का म नू क ना स रु रु क दा न य रु प
क ल पू न का न जाले ध न ॥ माल रू लां रु द वी का रु ला क रू
मा नू रु र्ध न अ रु हा स वी ल रू ना ज ग रू म हा य थ का ला प

ॐ कन २ कनू २ व न्ध २ शा स य २ भा रु य २ ऊं २ ह न २ हं २ रु दू २ द ह २ य क
२ रु क २ व स क नू धि ना क मा ला व ल म्बी न. ग रु २ स फ पा ना ल ग कः
ॐ रु ग. स र्प वा न क रू य २ आ क य २ ऊं २ ह २ आं २ हां २ ऊं २ की ती
२ भी ती २ धी नी २ हि नी २ हं हं रु दू रु दू स्वा हा ॥ ॥ ॐ ख २ स्वा हि २ स
व य रु ना रु स रु रु. पु रु पी भा वा त्मा ना य स्मा. ज क ज की त्या द य ॐ

मं व ली. ग रु नु स र्व सी द्धी भ पु य रु. य (थे व य (थे र्थ मी व नु जी पु र्थ
भा श्री कृ म र्थ भ म स र्व स त्वा नां व. स हा य का रु वं रु हं हं रु दू स्वा हा
॥ ॥ ॐ न्द्रा दि व जी स ह द व स र्धे त्री मं व ग रु रु व ली वी भू रु अ नी
य मा ने म ल रु प नी श्र. आ प य नी वा य ध ना धी य श्र ॥ ॐ आ नी रु ना
धी य नी श्र द वा. स उ र्ध व उा क पी का म ह श्र द वा स म ना रु वी रु व ना ग

धनाधनागुङ्गलोलसमस्त। पुनीपुनीस्वकनीवदयनु॥ स्वक
स्वका। धेवदिभाधुलुता। गङ्गनुतुङ्गासंगलोलसमस्त। स
पुङ्गदात्राऽस्वजनसमस्त। पुष्पवलीधूमवीलयनंव। उजनु
पौवधुजीपुनुवदनीदवकर्मसरुतयुगनुस्वाहा॥
ॐ नमानत्रहयाय॥ नमावधुवजमानस। महावजकोराय

जस्तीमसलपत्रमुपाभगृहिरुहस्ताय॥ ॐ अमनकुशुली। स्व
स्वस्वाहि२नीसुकीसुवन्धवन्धहनहन। पवपव। गङ्गगङ्गीवी
स्तोत्रयसर्वविप्रवीनायकानां महागणयनीजीवीकांककत्राय
हं हं रुद्र रुद्र स्वाहा॥ ॥ ॐ सर्वस्वधगदमदिगलोकधाम॥ सम
मध। ब्रह्मपुत्रमानूनगायममशुतयत्रानुगकसमावस्थावली

धर्मश्चाहुर्ममसर्वं स नृणां आकांक्षया ह्यर्थवसानाः सर्वं
जायते गदमदी गला कथा ह्यननकगगल समुद्रमूह पुमन
समासा कपाला सर्व सखा ॥ रुच्यथा ॥ उं वजायू धमाया वज
वहानन वज काल वज नाग वज वज नील वज रुची न व वज
लो शु वज कार वज कृष्णी वज पुरु मो न वज धमवी प्रपृथो द वज

सपत्री वानान् ॥ ॐ देव्युप दीप गन्धने वशादि संयुक्त वल्य म
हानसं पुनी कृपय रुच्यनी मम हिन ग्ध सवर्ग धन धन्य यो वना
प्राग्ध सकृत्खाय हानी कान् ॥ सर्व इक्षान् अन्त्या म्धम नृणां ऊरुय
रुक्मय र माहय रवीध सय रदभा कन या वत्स म सर्व सखाना व
धन धन्य यो वना प्राग्ध सकृत्खानी महा सुख प्रपृथय या वदा वाधि

हं जहं हं हं महा कृहा स. ग ऊं य ग ऊं क प्र व हं य ऊं हं हं हं
हा ॥ ॥ ॐ श्री ४ हं हं ४ ना ह का ला नी. व नु स र्प वृ ह म ह ल
मु क म ती भ न. वृ ह त्प ती क ह त्प ४ स प नी वा न त्प ४. ॐ दे व ती
ग न्ध. पू ष्प धू प दी पा ऊ न. द दा ती ही न वा ग त्प. स प नी वा ना शा
सी पुं मा ग ह् ४. ॐ व ती ग ऊं ३. खा दं तु मी वं ३. ॐ हं वं हा स ह फा न वं

हं न मा ह ग व नः वं ३ य न सा ण नः प्र द ना य त था ग
न सा हं नः स न्य य स न्ध य ॥ त द था ॥ ॐ वं ३ः वि द्या
वं ३ः म हा न ग वं ३ ॥ न हा वा वि द्या प्र णं क म णी ॥ स व
के मा म्ब न हा वि ४ व न्ध खा दा

ಶ್ರೀ ೧೦೮ ಶ್ಲೋಕ
113

रुद्रस्वाहा॥ ॥ॐ हूं ह्रीं हूं वं कालवीरुकाकाकगृ (अलूक खानजम्
कमूरुव स्य ४ स य नी वा जी स्य ४ ॐ देवलीपूषाधू पदि य ग न्ध भूज
रुद्रदा मरु रु वा ग स्य स य नी वा नान् श्रीपुमाग रु २ खादनु
पी व नु सह फान् म म सर्व स स्वा ना व ३ आ नी कृ नू पू सीं कृ
नू न का कृ नू व ज ध न भ्रा ह्य य नी हूं हूं रुद्र रुद्र स्वाहा॥ ॥

ॐ ह्रीं नीलजी मूरु संका मं धाल ड ड् रु यान कं ड ड् क म वि नू या
ऊ ऊ य याल व ह रुद्र न व हिव तिसि यु की गृ रु २ रु न २ द ह २ य व २ ख र
खा हि २ रु २ रु २ वि प्र रु न व नू य न व ली ए कि गृ रु २ रु न २ ह्रीं हूं रुद्र
स्वाहा॥ ॥ॐ विप्रान् क का य महा क्रा रा य महा व न य ना कु मा रु दं
व ली गृ रु २ रु व २ खा हि २ म म सर्व वि प्र ग भा न् रु द २ रु द २ रु रु २ द ह

२यच२मथ२३ं आविप्राक्तदृष्टंरुद्रस्वाहा॥ ॥ॐ नमो ब्रह्माय क
सावरासिक्तदयाय यनात्मासमविहाय ॥ ॐ भद्रके कमर्हय स
र्वसत्त्वानां इष्टवकनकात्री ॥ ॐ मं वली दिव्यगभनमायक उय
ॐ मम सर्वसत्त्वानां मनूहनायां सग्यकी वा क्षो प्रकिष्टाय नाय
ॐ आ२सगकवज उयहा२दंरुद्रस्वाहा॥ ॥ॐ आ२दंरुद्रा२आकाशवा

यूक्तगुडकपृथ्वीवी आधियक स२ ॐ दं वली गृह्णतु स्वादतु पीवतु
जंरुं वं हा२ सरुफान मम सर्वसत्त्वानां च ॥ आनिपू सिं कनू न जावन स
गुपिं कर्चु ॐ ॐ ॐ ॐ वजधन आशाय यमिस्वाहा॥ ॥ॐ नमो सून
याय कथागताया रुक् सग्यकी ब्रह्माय ॥ कथथा ॥ॐ सून २ प्रसन २
रुन २ उन २ मन २ संकपय २ सर्व प्रकाना स्वाहा॥ अयसन रु अव

गायत्रिः। एतद्व्याहृते सर्वलोकधाम उनीवासनां महाहा की
नी धुकानां हूं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वक्रि वायू नाकसचरु सूर्य महबल नाभ एकानां सर्वकामा
नं दं वली गुरु मुभी पुं रूल धूप दीप ने व आदि सर्वस्त्वाना
वर हूं हूं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ ॐ श्रीशिवनाथाय नमः ॥

गार्धकभाय बहुविंभनी नाराय पीदम कुशाय कटजी मूक वसु
षाय कपालेनाला धनराय इ भ्रात्म ऊन नाराय तुमानय रका
नेय र गर्जय र रुजय सोषय र सफ साग नान बन्धय र गुरु र
रुन र सर्व भऊन हहा हि ली कुरू ह हे हा ही हं ह कूं कूं दूर स्वाहा
॥ हु न भारु गवक सी बहु महा नाथ भाय देवा सर न मनसा

हासनकनाय सकलमात्रदीनाभाय. नृकसिद्धसुखसवयूष. नलभी
नत्मीरुदंबलो गृह २ मम सर्व विप्रग धान्नहन २ स्वयं ग्रीव २ म
हात्राषध निवागय २ शासय २ शामय २ छिन्द २ हिन्द २ नाशय
२ क्षामय २ क्षामय २ कृद २ रुद २ सर्वदूषतलान्न मम सर्वविप्र
विनायकानां रुस्मिं क नू २ कृं कृं रुद स्वाहा ॥ ॥ नमः श्री नरक

बुद्धानां सफधर्मानां सफसंधानां रुं सीकारुषधुं सकलवि
मल रुं पुसंगी नड श्री यवकवर्हि सर्वमनुकर्मकाउनकीलन
वामकक यनु ककु केन विरु कसर्व छिन्द २ हिन्द २ मिनि २ कृं कृं
रुद २ स्वाहा ॥ ॥ रुं हावकी महाय कीशी प्रीयकनी महाय कः
सनायक ययक पूष सपनी वा ना लां महासर्वाना ना भकु ध

नूधना सर्वा लीका नरुषीका प्रकीर्त्या यशुमेरु ॐ आ १ पूषा धूय
दीपगन्ध नेवद्य च पुधुयका कादि मम सर्वायनी का नात्मा
पुर्णगुण स्वस्वाहि २ कायय २ हानकी महायज्ञली सर्वार्थसाध
नीदहि ॐ आ २ हं हं स्वाहा ॥ ॥ ॐ आर्य महापुनी सना आर्य
महासाहस्रयमदली माहमायूनी महाभीरुवनी महामन्त्रान्

माननी ॥ वृद्धा लब्धे वमहात्मान वीशादवी महाबला मा म की
रकटी च व तानादवी कथा कृणी ॥ वज्रसंकलयास्वना महा
स्वना कथे व व महाकाली चद्रति च वज्रद्रति कथापना ॥ सुपा
नी वजपाणी च वजपाति महाबला वजमाला महाविद्या क
थे वामृग कृत्तुली भूयना जिता महादवी कालकर्त्री महा

वला कथा धन्या महा हाग। यन्न कृत्वा श्री भव वापूषादं नी मलीव
ज। सर्व कभी वपी इला॥ महा कजा कथा देवी धन्या च वी घूला
सीनी। ना कृसे कजा से व वृद्धा न की नी नायका॥ का पासी नीम
हा हाग। धन्या ले कभी नी कथा। अ न्या अ व ह वा वी शा स खान ग
ह का नी नी॥ कथ था॥ उं का सी कला सी कृ हा शु। भं खि नी कम ला

की हा न की ह नी क भी य म इ नी य म ना क सी भ व नी च रु क य स नी
य नी रु द ग अ पू य पू य दी य ने व य व सी च द दा स्मा सी न कां क न
क न म म सर्व स खाना य सर्व रु था य ड व ल ४ नी व नु व र्म म नी य स
नु स न दा स नी सी अ नु म नु य द ल ४ खा हा॥ ॥ उं न मा ला क ना था
य॥ द वा ह न य क ना क हा दि ही वे दी क था द यू र्मा अ म या दि स ही

ॐ पुवतवीनीक कायूही काय ॐ दंवली इर्गादिसहिहं गुरु २
भीसद्व सत्त्वाना ३ ननकादि इहखाहा नय २ उद्यय २ सद्यय २
वृद्ध सत्य धर्म सत्य संध सत्य सत्य वादिनी सत्वन ३ अ० ४८
रुद्र स्वाहा ॥ ॥ धना खानजान ॥ गाय या य ॥ स ० ४८ ॥
कीर्ण जान ॥ ॥ हाय हा ॥ लक वृद्धादि ॥ ॥ पुकर रुद्र मम

भवापर्व क क शु ल गु ह याम पाद १ ५ य ५ म न्याग न वी ॥ ५ ८ ॥
॥ रुद्र नोड महा नोड द व द रु स मा भि ना रुद्र कला लवी रुत्ती
नंदा नी रु वी नाय का ॥ वाम नु धा न वी रुत्ती उ मा द वी रु सै रु वा
रु या च वी रु या वै व अजी ना अ प ना जी ना ॥ रुद्र काली महा
काली रुद्र काली व या गी नी ॥ ॐ द्या व द्दी ड की धा नी ल व

की ही द म सा नी ॥ का धा जा नी धी धी से न्या ग्रा मा व ही कः
धा गी नी. धा न नू धा म हा नू धा. हं क नू धा क धा ला नी ॥ क
धा ल ना नी ना नी न्या. ख धा ग म्भ मह धी का. ख मे ह का म
न म्भ ह का. व ज ह का ध नू क था ॥ प व ज की नी न हा क ल
म व का मा नू म्भ म नी १. धा ग म्भ ल म हा ना गी. व ज म्भ नी

पु रु क था ॥ क थ ग क म हा का य. नी नं जन धा ग म ली का. ॐ दे व
की ध नी आ हा. आ वा क त व स ला नां ॥ ॐ क क. क न न र व व
व न्न न र व र खा द न र म र ह क. पु र खा न. ह न र धा क य र दा
न य क क था य ल. य धा न मी हि क क कं ॐ दे व र खा ना ॥ ॥ ६
वा ल ना स र्ग उ क म्भ सी धा. ला का धे पु ना क र पू र ना. पु ग म्भ